

UGC serial No. 11409

ISSN 2394-2665

अरुणागम

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अनुशंसित
मूल्यांकनपरक शोध पत्रिका

संयुक्तांक : 2015-16



प्रकाशक

शोध एवं विकास प्रकोष्ठ

जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय, पासीघाट

अरुणाचल प्रदेश 791103

मुख्य संरक्षक

डॉ. जोरम बेगी

संरक्षक

डॉ. तायेक तालोम

प्रधान संपादक

डॉ. शिवानन्द झा

संपादक

डॉ. हरीश कुमार शर्मा

परामर्श-मण्डल

डॉ. प्रसिद्धनारायण चौबे

डॉ. जयप्रकाश नारायण

डॉ. विधानचन्द्र राय

डॉ. मधुसूदन शर्मा

डॉ. हरिनिवास पाण्डेय

प्रो. ओकेन लेगो

डॉ. अमरेन्द्र त्रिपाठी

डॉ. (श्रीमती) जोरम यालाम नाबाम

आवरण सज्जा : हरि लोयी

जवाहरलाल नेहरू कॉलेज, पासीघाट के वित्तीय अनुदान से

डॉ. शिवानन्द झा, प्रधान संपादक द्वारा प्रकाशित एवं विकास कम्प्यूटर्स एंड प्रिंटर्स द्वारा मुद्रित ।

[आलेख में व्यक्त विचारों की जिम्मेदारी लेखकों की है ।

संपादक इसके लिए उत्तरदायी नहीं होंगे । किसी भी तरह के

वाद के लिए न्यायिक क्षेत्र ईटानगर होगा ।]

मूल्य : 50 रुपये

अनुक्रम

संपादक की कलम से	डॉ. शिवानन्द झा	4
राष्ट्रभाषा हिंदी और जनपदीय बोलियां	—प्रो. नन्द किशोर पांडेय	5
हिंदी हैं हम.... अब नहीं रहेंगे	डॉ. हरीश कुमार शर्मा	13
उपेक्षित प्रश्न : जनजातीय भाषा सर्वेक्षण, संरक्षण	प्रोफेसर हेमराज मीणा 'दिवाकर'	19
वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी का बदलता स्वरूप	क्षेत्रिमयुम विद्यारानी देवी	22
भक्ति और पर्यावरण के परिप्रेक्ष्य में 'गंगालहरी'	—प्रो. आरिफ नजीर	24
श्रीमंत शंकरदेव और उनका 'केलि-गोपाल'	—डॉ. अनुशब्द	32
समकालीन हिंदी कहानी	डॉ. अखिलेश कुमार 'शंखधर' / लोड्जम रोमी देवी	36
लोड्जम रोमी देवी' मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'फरिश्ते निकले' के यक्ष-प्रश्न	—डॉ. विश्वजीत कुमार मिश्र	42
पीली छतरी वाली लड़की : स्त्री पीड़ा का आख्यान	आशुतोष	50
नासिरा शर्मा के उपन्यास 'शात्मली' में वर्णित पुरुष मानसिकता	अपराजिता राय	57
शब्द-कुंज के शीर्षस्थ आलोचक : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	डॉ. सत्यप्रकाश पाल	63
रचनाकार, जब आलोचक होता है....	प्रदीप त्रिपाठी	67
नोक्ते जनजाति के लोरी गीतों की भाव-सत्ता	डॉ. अरुणकुमार पांडेय	74
राजस्थानी और न्यीशी लोक-गीतों में स्त्री पक्ष	डॉ. जोराम यालाम नाबाम	79
ब्री-यी-मी मिरूपी ची ओंसे	मेडिको मेन्जो	84
भारतीय नारी	—डॉ. हरिनिवास पांडेय	87
हिंदी में दलित प्रश्न : पत्रिकाएं एवं पुस्तकें	—डॉ. इकरार अहमद	90
भूगोल में प्रादेशिक नियोजन की संकल्पना	—डॉ. शिवानंद झा	95

पीली छतरी वाली लड़की : स्त्री पीड़ा का आख्यान

आशुतोष

हिंदी कथा आलोचना अक्सर 'लोकप्रिय विमर्श' के आधार पर अपने साहित्यिक मानक रचती रहती है। इससे कथा आलोचना को अपने सामाजिक सरोकारों से जुड़े रहने की सुभीता तो मिल जाती है। किन्तु इसी को प्रेरणा मान लेने से कई महत्वपूर्ण रचनाओं के आशय को समझने की चूक भी हो जाती है। इस तरह की हुई चूक का उदाहरण है उदय प्रकाश की लम्बी कहानी 'पीली छतरी वाली लड़की' का मूल्यांकन।

ये खालिश कहाँ से होती....

'पीली छतरी वाली लड़की', 'हंस' (कथा-मासिक) में धारावाहिक रूप में प्रकाशित होने के साथ ही चर्चित हो गई थी। इस कहानी की बहुस्तरीयता इसे महत्वपूर्ण बनाती है। उदय प्रकाश की कहानियों में कई पाठ मौजूद होते हैं। उनकी कहानियों में रूपक, प्रतीक और उपपाठ के कई सामाजिक संदर्भ किसी भी समर्थ आलोचक को आमंत्रित करते हैं कि वे उनके सहारे अपनी क्षमता का परीक्षण करें। यह उनकी सभी महत्वपूर्ण कहानियों से स्पष्ट है। 'वारेन हेस्टिंग्स का साँड़', 'पाल गोमरा का स्कूटर', 'और अंत में प्रार्थना', 'मैंगोसिल', 'मोहनदास' और 'पीली छतरी वाली लड़की' ये कहानियाँ साहित्य में नव औपनिवेशिक परिवेश, पात्र, अस्मिता और आत्मनिर्वासन का द्वन्द्व, इतिहास और आख्यान का जटिल तनाव, सम्प्रेषणीयता और वाक्य संरचना, यथार्थ, कल्पना और फैंटेसी, आख्यान के पारम्परिक स्वरूप तथा बदलते यथार्थ के संदर्भ में नयी संरचना की चुनौतियाँ, भाषा में परिवर्तन के साथ ही नये सन्दर्भों की बहुलार्थी भाषा को लेकर हमारे समय के यथार्थ को पकड़ती हैं, अभिव्यक्ति करती हैं, खंडित करती हैं और उसे गढ़ती भी हैं।

उदय प्रकाश बड़े 'विजन' के रचनाकार हैं। अतः उनके मूल्यांकन के आधारों के प्रति आलोचक को सबसे अधिक सचेत रहना होगा। वैसे भी उदय प्रकाश आलोचक के लिए कोई काम छोड़ते भी नहीं हैं। यह स्थिति तब और महत्वपूर्ण हो जाती है जब पाठ के रूप में सामने 'पीली छतरी वाली लड़की' हो। यह कहानी अपने पाठ और उपपाठों के कई सामाजिक संदर्भों के साथ आलोचक को भटकाती है।

'पीली छतरी वाली लड़की' में कई सारे मुद्दे एक साथ आते हैं, जैसे—भारत का नृतत्त्वशास्त्रीय स्वरूप, राष्ट्रवाद, जातिवाद, निजीकरण, बाजारवाद, आदिवासी, साम्प्रदायिकता, पूर्वोत्तर राज्यों के प्रति उपेक्षा और स्त्री जीवन। इन सभी मुद्दों में एक चीज 'कॉमन' है और वह है 'वर्चस्व'। वर्चस्व की मनोवृत्ति और स्थिति ही इन तमाम समस्याओं के मूल में है। इस कहानी के पाठ को यदि सचेत तौर पर ग्रहण किया जाय तो हम यह समझ सकते हैं कि यह कहानी अन्ततः 'जाति' को खारिज करती है और जातिवाद का विरोध करती है। इसके पीछे का वैचारिक आधार 'एन्थ्रोपॉलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया' की रिपोर्ट है जो इसी कहानी में किन्नू दा के माध्यम से दिशा निर्देश देती चलती है। किन्नू दा लेखक का वैचारिक प्रतिनिधित्व करते हैं। कहानी में मौजूद ब्यौरों को 'डिकोड' करने में हमें अपने पूर्वाग्रहों से मुक्ति पानी होगी। इस स्थिति के अभाव में इसे बहुत आसानी से ब्राह्मण विरोधी कहानी के रूप में व्याख्यायित किया जा सकता है। अपने प्राप्तव्य के समर्थन में इसी कहानी में मौजूद कई सारे ब्यौरों, घटनाओं और

संवादों को प्रस्तुत किया जा सकता है। किन्तु यदि सचेत तौर पर देखा जाय तो वे बातें ब्राह्मण (जाति) नहीं 'ब्राह्मणवाद' (वर्ण व्यवस्था) के विरोध में हैं। प्लेटो कहते थे कि 'हम जबाब क्या पाते हैं यह निर्भर करता है कि हम सवाल क्या पूछते हैं।' यदि हमारा प्रस्थान गलत होगा तो हमारा निष्कर्ष भी गलत ही होगा। ऐसे में कोशिश यह होना चाहिए कि 'पीली छतरी वाली लड़की' से सही सवाल किया जा सके।

लेखक के विचारों का प्रतिनिधित्व करने वाले किन्नू दा कथा नायक राहुल से कहते हैं कि एक किसी भी मध्यवर्गीय परिवार की चार पीढ़ियों के एक फोटोग्राफ का मॉरफोलॉजिकल अध्ययन करने पर पता चलेगा कि "वह एक अकेला फेमिली फोटोग्राफ हिन्दुस्तान के पिछले हजारों साल के जेनेटिक इतिहास को खोलकर तुम्हारे सामने रख देगा, यत तत ब्राह्मण्डे, वे सारी नस्लें और जातियाँ, जो अतीत में कभी इस महादेश में आयीं, उन सबके वंशज, उनकी संततियाँ बिल्कुल संभव है कि एक ही मिडिल क्लास फेमिली में तुम्हें मिल जाएं, याद रखो यही हमारे समाज का वह हिस्सा है, जो अपनी श्रेष्ठता की ग्रंथि का मारा हुआ है। शुद्धतावादी, सांप्रदायिक, भोगवादी, नस्लवादी महान भारतीय सवर्ण मिडिल क्लास। उसकी ही फेमिली में कोई गोरा होगा, कोई काला, कोई भूरा या सांवला। कोई चपटी नाक और मोटे होंठ वाला होगा, कोई लंबी-पतली नाक, बड़ी-बड़ी आँख, प्रशस्त ललाट वाला। कोई पीला गोल-मटोल चेहरे का। हा...हा...हा...। सब मौजूद हैं। आर्य, द्रविड़, नाइजर, मंगोल, ऑस्ट्रिक-सब, एक ही पिंड में।" किन्नू दा के इस कथन के बाद किसी भी जातिगत श्रेष्ठता का कोई आधार नहीं बचता है। यह कहना कोई निरा गप्प नहीं है बल्कि यह एक एन्थ्रोपॉलजिकल सच्चाई है। उदय प्रकाश की विशेषता है कि वे जो कहते हैं उसके साक्ष्य उनकी कहानी में मौजूद रहते हैं। 'एन्थ्रोपॉलजिकल सर्वे ऑफ इंडिया' की रिपोर्ट पर लिखी गयी यह पहली हिंदी कहानी है जो इस कहानी के साथ ही हिंदी कथा परंपरा को भी एक ऊँचाई देती है। उदय प्रकाश यहाँ जिस बात पर जोर देते हैं उसी को हजारीप्रसाद द्विवेदी कहते हैं कि "मुझे मानव जाति की दुर्दम-निर्मम धारा के हजारों वर्ष का रूप साफ दिखायी दे रहा है। मनुष्य की जीवनी-शक्ति बड़ी निर्मम है, वह सभ्यता और संस्कृति के वृथा मोहों को रौंदती चली आ रही है। न जाने कितने धर्माचारों, विश्वासों, उत्सवों और व्रतों को धोती-बहाती यह जीवन-धारा आगे बढ़ी है। संघर्षों से मनुष्य ने नयी शक्ति पायी है। हमारे सामने समाज का आज जो रूप है, वह न जाने कितने ग्रहण और त्याग का रूप है। देश और जाति की विशुद्ध संस्कृति केवल बाद की बात है। सब कुछ में मिलावट है सब कुछ अविशुद्ध है। शुद्ध है केवल मनुष्य की दुर्दम जिजीविषा।"² किन्तु श्रेष्ठता के आत्म-गौरव में भारतीय समाज की इस सच्चाई को जान-बूझकर भुलाया गया। उदय प्रकाश की इस कहानी में भारतीय समाज में व्याप्त जातिगत श्रेष्ठता को प्रश्नांकित किया गया है। दरअसल उदय प्रकाश यहाँ ब्राह्मण का अर्थ 'सत्ता संरचना' लेते हैं। 'सत्ता' का अपना एक चरित्र होता है। जिसका निर्माण वर्चस्व और दमन के आधार पर होता है।

'पीली छतरी वाली लड़की' में दमन और शोषण के जितने भी प्रसंग हैं चाहे वह राष्ट्रवाद के नाम पर हो, साम्प्रदायिकता के नाम पर हो, पूर्वोत्तर राज्य और शेष भारत के नाम पर हो, आदिवासी और नागरिक समाज के नाम पर हो, ब्राह्मण और दलित के नाम पर हो और चाहे बाजारवाद और आर्थिक उदारीकरण के नाम पर हो सबके पीछे वही वर्चस्व की भावना ही काम कर रही है। दमन और सत्ता की इजारेदारी हमारे समय का सच बन गया है। झूठ को सच की जगह सत्ताएँ स्थापित कर रही हैं और वास्तविक एवं ईमानदार स्वरो को झुठलाया जा रहा है। किन्नू दा की यह स्पष्ट स्वीकारोक्ति इस कहानी की मूल भावना है कि "इतिहास असल में सत्ता का एक राजनीतिक दस्तावेज होता है जो वर्ग, जाति या नस्ल सत्ता में होती है, वह अपने हितों के अनुरूप इतिहास को निर्मित करती है। इस देश और समाज का इतिहास अभी लिखा जाना बाकी है।"³ इस देश और समाज का इतिहास अभी लिखा जाना बाकी है, क्योंकि जो लिखित इतिहास है वह सत्ता द्वारा सत्ता के लिए तैयार किया गया राजनीतिक दस्तावेज है। क्योंकि

प्रत्येक राष्ट्र/राज्य अपने निर्माण के बाद अपना इतिहास लिखते हैं। इतिहास लिखने के लिए स्मृतियों को पुनरोत्पादित किया जाता है और अंततः उनमें से अपने अनुकूल पड़ने वाली स्मृतियों को चुन कर नया इतिहास लिखा जाता है। भारत में स्त्री, दलित, अल्पसंख्यक, आदिवासी, पूर्वोत्तर राज्य आदि कभी सत्ता संरचना के हिस्सा नहीं बन पाये। इसीलिए ये सत्ताओं द्वारा लिखे गए इतिहास के विमर्श से बाहर हो गए। ये सारे समूह सत्ता के विमर्श के घटनास्थल हैं। ये लांछित हैं, प्रतिकूल हैं इसलिए कि ये सत्ता के विमर्श से बाहर हैं। 'पीली छतरी वाली लड़की' का मूल स्वर सत्ता के इसी वर्चस्व का 'काउण्टर डिस्कोर्स' है।

....जो जिगर के पार होता

'वर्चस्व' एकाधिकारवादी एवं सामंती मानसिकता से उपजता है। जिसकी शुरुआत सबसे पहले स्त्री को जीतने से होती है। स्त्री शरीर और चेतना पर कब्जे की राजनीति पुरुषों का सबसे बड़ा हथियार है। यह राजनीति कई बार इतने सूक्ष्म ढंग से काम करती है कि स्त्री को भी इसके पीछे की मानसिकता समझ में नहीं आ पाती है और वह स्वयं पुरुष सत्ता द्वारा की गयी परिभाषा को अपना जीवन-सत्य मान लेती है। 'पीली छतरी वाली लड़की' इसी पुरुष वर्चस्व की परिभाषिकी का दमन-तंत्र और उससे लड़ती स्त्री पीड़ा का महाआख्यान है।

कहानी का आरंभ ही स्त्री के सन्दर्भ में जड़ पुरुष दृष्टि के साथ होता है। कथा नायक राहुल के कमरे की खिड़की पर लगी माधुरी दीक्षित की नंगी पीठ जो सलमान खान की गुल्लक से चोट खाने के बाद एक सेकेंड के चौबीस में से किसी एक फ्रेम में फ्रीज हो गयी है। उदय प्रकाश स्त्री की प्रवृत्ति और तमन्नाओं के सन्दर्भ में आम पुरुष-दृष्टि का परिचय देते हैं "लड़की चोट खाना बहुत पसंद करती है। वह बिल्ली या गिलहरी नहीं है, जिसकी पीठ पर प्यार से धीरे-धीरे उंगलियाँ या हथेलियाँ फिराओ उसे संभाल-संभाल कर सहलाओ तो वह गुर्र-गुर्र करती लोटम-लोट होगी, लड़की तो वो चीज है, जिसको जितना मारो, जितना कूटो, उसे उतना मजा मिलता है। लड़की तो असल में ताकत और हिंसा को प्यार करती है।" यह स्त्री के सन्दर्भ में आम पुरुष नजरिया है। जो स्त्री को सम्पत्ति समझता है और दमन तथा वर्चस्व के द्वारा उस सम्पत्ति को अपने अधीन रखता है। इसी के द्वारा वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि "लड़कियाँ दरअसल चोट, पीड़ा, हिंसा और ताकत को प्यार करती हैं। वे मूर्ख बनाया जाना, उत्पीड़ित होना और निर्ममता के साथ अपने भोग लिए जाने को पसंद करती हैं।" उदय प्रकाश यहाँ पूरी निर्ममता से स्त्री के प्रति सामंती पुरुष दृष्टि का पर्दाफाश करते हैं। स्त्री के प्रति यह पौराण्यवादी पुरुष दृष्टि है। यह वही आत्मश्रेष्ठतावादी दृष्टि है जिससे पश्चिम हमेशा से ग्रस्त रहा है। पूर्व के प्रति पश्चिमी साम्राज्यवादी दृष्टि को एडवर्ड सैड अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'ओरियन्टलिज्म' (1978) में बेनकाब करते हैं। 'ओरियन्टलिज्म' वास्तव में शक्तिहीनों और शक्ति-सम्पन्नों के आपसी संबंधों का अध्ययन है जो यह साबित करता है कि शक्तिसम्पन्न पश्चिम ने शक्तिहीन पूर्व के साथ कितना अपमानजनक व्यवहार किया है। एडवर्ड सैड ने पश्चिमी आत्मश्रेष्ठता के कुछ उदाहरण दिये हैं—“पूर्व तर्क-शून्य, पतित, बचकाना अलग (प्रकार का) है और इस तरह पश्चिम तर्कयुक्त, गुण सम्पन्न, प्रौढ़ और 'सामान्य' है।” “पूर्व को पश्चिमी समाज के कुछ ऐसे तत्वों (बाल अपराधी, विक्षिप्त, स्त्री, निर्धन) से जोड़ा जाता था जिनकी उभयनिष्ठ समानता का सर्वोत्तम सटीक नाम हो सकता है घटिया दर्जे का विजातीय।” इन उदाहरणों को देख सकते हैं कि इसमें किस तरह पश्चिम पूर्व के समाज को परिभाषित करता है। पूर्व को 'विक्षिप्त, बाल-अपराधी, निर्धन और स्त्री' मानना एक हिंसक पुरुष भाषायी संरचना है। पश्चिम स्वयं को एक अपराजेय मर्दवादी धारणा और पूर्व को स्त्री, बाल अपराधी, विक्षिप्त से जोड़ कर देखता रहा है। वस्तुतः यह वर्चस्व की वही पुरुषवादी दृष्टि है जिसकी शुरुआत प्राथमिक स्तर पर पुरुष द्वारा स्त्री को जीतने से होती है। यही वह 'ओरियन्टलिस्टिक एप्रोच' है जिसके द्वारा पश्चिम

ने पूर्व को, ब्राह्मणों ने दलित को, हिन्दुत्ववादियों ने अल्पसंख्यकों को, शेष भारत ने पूर्वोत्तर राज्यों को और पुरुषों ने स्त्री को अपमानित, शोषित और उत्पीड़ित किया है। इस स्थिति और इस तरह के शोषण का प्रतिरोध इन्हीं शोषित समूहों द्वारा ही हो सकता है और यह महज संयोग नहीं है कि पश्चिमी मर्दवादी वर्चस्व के विरुद्ध अपने अभियान में गांधीजी अपने सारे प्रतीक स्त्रियों के जीवन से चुनते हैं, जैसे—नमक, चर्खा, सूत कातना आदि। ‘पीली छतरी वाली लड़की’ में अंजली जोशी भी तो यही कर रही है। यह वह धारणा है जिसके तहत प्रत्येक सत्ता अपने अधीनस्थों के सन्दर्भ में इसी तर्क के आधार पर अपना वर्चस्व कायम करती है। यह सत्ता की धारणा है और इसी के तहत सत्ता अंततः खुद को पुरुष के रूप में पेश करती है। ‘पीली छतरी वाली लड़की’ के बहुस्तरीय कथा-पाठों को देखिए—यही पुरुष (सत्ता) धारणा यहाँ सर्वत्र विद्यमान है। पूर्वोत्तर राज्यों और वहाँ के लोगों के लिए शेष भारत की यही सोच है। ब्राह्मणों (जाति नहीं वर्ण व्यवस्था) की दलितों के प्रति यही धारणा है। बहुसंख्यक हिन्दुत्ववादी अल्पसंख्यकों के बारे में ऐसे ही सोचते हैं। बड़े व्यापारिक घराने जिनका प्रतिनिधि चरित्र निखलाणी है वह संपूर्ण सार्वजनिक उद्यमों के प्रति भी यही नजरिया रखता है। उदय प्रकाश इस कहानी में इस समस्या के मूल पर उँगली रखते हैं। ‘सच’ यही है। ये अलग बात है कि ‘जब सच सामने आता है तो ऐतराज तो होता ही है’।

एक ऐसे समय में जब पूर्वोत्तर राज्यों के लोगों के प्रति गैर मानवीय बर्ताव किया जा रहा है। धर्म की प्रबल आक्रामकता में बाबरी मस्जिद का ध्वंस किया जा रहा है। दलितों के शोषण और अत्याचार के नये अध्याय लिख जा रहे हैं। आदिवासी समाज अपनी समस्त जातीयता और अस्मिता के साथ सभ्य समाज के लिए आश्चर्य और कौतुहल का विषय बनता जा रहा है। व्यापारिक एवं औद्योगिक घरानों के यहाँ लोक-कल्याणकारी राज्य के सारे सपने गिरवी रखे जा रहे हैं। ऐसे चालू समय में राहुल और अंजली प्यार कर रहे हैं। यह सबसे खराब समय में जीवन की एक मासूम सी सम्भावना को बचाने की कोशिश है। यह उदय प्रकाश का सबसे बड़ा देय है। इस प्रेम की भूमि विश्वविद्यालय है, और विश्वविद्यालय अपनी समस्त अकादमिक उपलब्धियों के बावजूद अपनी अति स्थानीयता के लिए अभिशप्त है। उदय प्रकाश की यह विशेषता है कि वे कभी अपनी स्थानीयता को नजरअन्दाज नहीं करते। जड़ों और मूल्यों से जुड़े रहने वाले लेखकीय सरोकारों की यह सबसे बड़ी उपलब्धि है। नामवर सिंह कहते हैं कि “युग सत्य को मूर्त रूप में पहचानना ही काफी नहीं है, साहित्यकार के जीवन और साहित्य में वह जितनी प्रगाढ़ता से अन्तर्भूत रहेगा उसकी रचना उतनी ही कलात्मक पराकाष्ठा पर पहुँचेगी।”⁸ इस आधार पर कहें तो उदय प्रकाश अपने लेखन में इस कसौटी पर खरे उतरते हैं। ‘पीली छतरी वाली लड़की’ की कथा जिस विश्वविद्यालय परिसर में घटती है। जिस अकादमिक दुनिया में प्रो. एस.एन. मिश्र, डॉ. लोकनाथ त्रिपाठी, प्रो. अग्निहोत्री, प्रो. चतुर्वेदी, प्रो. उपाध्याय जैसे शिक्षक हैं, विजय पचौरी, गोपाल द्विवेदी, विभूति प्रसाद मिश्र, बलराम उपाध्याय, कमल त्रिपाठी जैसे विद्यार्थी हैं, वह सब उदय प्रकाश के द्वारा बहुत नजदीक से देखा-सुना और भोगा गया है। इसलिए जिस युग सत्य के प्रगाढ़ता की बात नामवर सिंह कर रहे हैं उदय प्रकाश उसके द्रष्टा मात्र न होकर भोक्ता हैं। यही वह कारण है जो इस कहानी में मौजूद बहुस्तरीय ब्यौरों को विश्वसनीय बनाता है। विश्वविद्यालय के जिस परिसर में स्थानीय अराजक तत्त्वों द्वारा उत्पीड़ित मणिपुरी छात्र सापाम आत्महत्या करता है। उसी परिसर में या कहें कि समय में राहुल और अंजली प्रेम कर रहे हैं। सबसे भयावह समय में सबसे कोमल सपने की उम्मीद लेखक की विशिष्ट उपलब्धि है।

‘पीली छतरी वाली लड़की’ का लोकल पूर्णतः पुरुषवादी है। “सट्टे और लॉटरी का हर जगह बोलबाला था, तीन लोकल केबल चैनल थे, जो देर रात में ब्लू फिल्में चलाते थे। दिन में उनमें ज्यादातर आशाराम बापू, मुरारी बापू आदि का प्रवचन चलता था। सत्संग, जागरण, प्रवचन जितने बढ़ रहे थे, उतनी ही चोरियाँ, गर्भपात, बलात्कार, हत्याएँ, लूट और ठगी बढ़ रही थी, जिस अनुपात में ब्यूटी-काटेस्ट और फैशन परेड बढ़ रहे थे, उसी अनुपात में औरतों

की खरीद-फरोख्त और उन पर जुल्म भी बढ़ रहे थे।⁹ यह एक भयावह समय और समाज का दृश्य है। इस तरह के माहौल में स्त्री अस्तित्व की स्वीकार्यता की हकीकत यह है कि “स्त्री अगर बाजार में खुद को बेचे तो उसका कोई विरोध नहीं, लेकिन वह अगर किसी से कोई मानवीय और निजी संबंध का निर्माण करना चाहे, तो वर्जित है।”¹⁰ हिंदी विभाग के पद्मश्री तिवारी द्वारा आचार्य मिश्र के स्वागत में दिया गया भाषण पूरी तरह से स्त्री संसर्ग की भाषायी पुनर्प्रस्तुति है। “कालात्मा भगवान की कृपा से हिंदी विभाग को आज परम आदरणीय आचार्य त्रिभुवन नारायण मिश्र से ‘सहवास’ का जो सुयोग मिला है, उसकी अनुभूति मात्र से हमारा रोम-रोम पुलकित हर्षित है।”¹¹ इस तरह से पुरुषवादी माहौल और एक सस्ते यथार्थ के “इन्हीं तारीखों में कुछ ऐसा भी घट रहा था, जो सुबह-सुबह पत्तियों पर गिरने वाली ओस जैसा शीतल, पारदर्शी और सुंदर था।”¹² और यह ओस जैसा शीतल, पारदर्शी और सुंदर था.... अंजली का प्यार।

‘पीली छतरी वाली लड़की’ जितनी राहुल की कहानी है उससे कहीं ज्यादा यह अंजली जोशी की कहानी है। राहुल अपनी समस्त चेतना के साथ अपने वर्गीय आधारों को साथ लिए रहता है। जबकि अंजली हमेशा अपने की ‘डी क्लास’ करती चलती है। अंजली जोशी प्रेम करती है। वह अपनी समस्त वर्गीय चेतना को धत्ता बताते हुए उससे विद्रोह करती है। अंजली का प्रेम ही विद्रोह है। वैसे भी जो प्रेम नहीं कर सकता वह क्रांति भी नहीं कर सकता। अंजलि प्रेम करती है। उसका प्रेम पुरुष सत्ता के सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह है। जो उसे मुक्ति की ओर ले जाता है। जबकि राहुल दलित जातियों के हजारों साल के उत्पीड़न की स्मृतियों से मुक्त नहीं हो पाता। वह सामाजिक एवं राजनीतिक संरचनाओं के शिखर पर आसीन ‘ब्राह्मणवादी सत्ता’ के दमन चक्र को समझता है और उसके खिलाफ खुल कर बोलता है। इसलिए वह प्रेम के नितान्त वैयक्तिक क्षणों में भी प्रेमिका अंजली को उसके सरनेम ‘जोशी’ से जोड़ते हुए खुद को ‘पैंथर’ के रूप में पाता है। उदय प्रकाश यहाँ राहुल की मनःस्थिति का प्रामाणिक और स्वाभाविक वर्णन करते हैं। राहुल अंजली को पूर्णतः समर्पित पाकर भी यह सोचता है कि “यह इस भ्रष्ट सरकार के एक ब्राह्मण मंत्री एल. के. जोशी की बेटी है। वही जाति, जिसकी अनैतिक सत्ता मेरे और मेरे जैसे करोड़ों लोगों के लिए अभिशाप की तरह है। वही, क्रिस्टर्स जिन्होंने शताब्दियों से अन्याय, अतिचार, भ्रष्ट आचरण और भोगवाद का अश्लील नरक यहाँ पैदा कर रखा है।”¹³ उसे यह भी लगता है कि “तो क्या मैं वास्तव में एक सेंटीमेंटल जोकर हूँ.... मुझे कुछ नहीं मिलता। आयम आल्वेज अ लूजर.... जब फैसले का वक्त आयेगा, मुझमें और अपनी जाति में से एक को चुनने का सवाल, तो ये लड़की अपनी जाति को चुनेगी, ये ‘पॉवर’ को चुनेगी, मुझे नहीं।”¹⁴.... फिर तो राहुल महसूस करता है “मैं एक तेंदुआ हूँ अ पैंथर....” और “राहुल के भीतर तेज आँधी और हिंस बनने लगे पशु की उत्तेजना एक साथ जाग उठी थी और अब पूरी ताकत के साथ, दबी-कुचली जातियों की समूची प्रतिहिंसा के साथ शताब्दियों से उनके प्रति हुए अन्याय का बदला ले रहा था।.... थप्प थप्प ! उसका हर आघात एक प्रतिशोध था। उसकी हर हरकत एक बदले की कार्रवाई थी।”¹⁵ यह पूरा प्रकरण एक तरह से ‘निज’ को ‘सामूहिक चेतना’ से स्थानान्तरित करने से बावस्त है। अस्मिता विमर्श में माना जाता है कि ‘हर उत्पीड़ित अस्मिता एक उत्पीड़क अस्मिता का निर्माण करती है। तो क्या राहुल के साथ भी यही हो रहा है। क्या राहुल उत्पीड़क बनना चाहता है।’ लेकिन इस प्रसंग के बाद ही अंजली की निर्दोषता राहुल को तोड़ देती है। वह अंजली की आँखों को देखता है “ये कितनी निर्दोष, कितनी अबोध, किसी नन्हीं-सी बच्ची की पवित्र आँखें थीं। समय की कोई भी धूल, कालिख या कलुष उनमें नहीं था, वे कोपलों की तरह नवजात थीं।”¹⁶.... राहुल ग्लानि और पश्चाताप में टूट जाता है। वह फूट-फूट कर रोता है। राहुल का रोना प्रतिहिंसा के प्रति पश्चाताप है। जिसके वशीभूत होकर वह प्रेमिका अंजली की उसके जाति से जोड़कर देख रहा था और ‘हमलावर’ हो रहा था। राहुल का रोना इस बात का संकेत है कि ‘जातिगत’ हिंसा में की गयी अमानुषिकता कितनी भयावह है। राहुल रो सकता है, राहुल रोता है क्योंकि वह मनुष्य है। जिस ‘लोकल’ में वह **रोना**

है, वहाँ प्रो. लोकनाथ त्रिपाठी, प्रो. अग्निहोत्री, प्रो. चतुर्वेदी, प्रो. उपाध्याय हैं.... पर ये नहीं रोते हैं.... ये सिर्फ हँसते हैं।.... शैतान भी हँसता है.... हुप्प.... हुप्प।....

राहुल अपने बेदाग प्रेम के बावजूद अपनी वर्गीय अस्मिता से अपनी बेलौस चेतना को बचा नहीं पाता। राहुल की चेतना के निर्माण के पीछे क्या है। या किन परिस्थितियों में राहुल की इस चेतना का निर्माण हुआ है। मार्क्स एंगेल्स की प्रसिद्ध किताब 'जर्मन आइडियालॉजी' (1845-66) में मार्क्स कहते हैं कि "विचारों, धारणाओं और चेतना का उत्पादन सीधे इंसान के भौतिक जीवन से जुड़ा है जो वास्तविक जीवन की भाषा के समान है। मनुष्य का सोचना, विचारना और आध्यात्मिक अंतःक्रियाएँ उसके भौतिक व्यवहार में संबद्ध होती है। चेतना जीवन का निर्धारण नहीं करती बल्कि जीवन चेतना का निर्धारण करता है।"¹⁷ इसी तथ्य को मार्क्स की एक अन्य कृति 'ए कन्द्रीव्यूशन टू द क्रिटिक ऑफ पॉलिटिकल इकोनॉमी' (1859) की भूमिका से और अधिक विस्तार में समझा जा सकता है। मार्क्स कहते हैं कि "मनुष्य सामाजिक उत्पादन की प्रक्रिया में विशेष संबंध कायम करता है जो अनिवार्य होते हैं और उसकी इच्छा से स्वतंत्र भी। ये उत्पादन संबंध भौतिक उत्पादक शक्तियों के विकास की अवस्था में भी संबंधित होते हैं। ये उत्पादन संबंध ही अपनी समग्रता से समाज के आर्थिक ढाँचे को निर्मित करते हैं जिसकी बुनियाद पर कानूनी और राजनीतिक अधिरचनाएँ खड़ी होती हैं। ये अधिरचनाएँ ही सामाजिक चेतना के विशिष्ट स्वरूप के निर्धारण से जुड़ी होती हैं। भौतिक जीवन में उत्पादन की पद्धति ही सामान्यतः सामाजिक, राजनीतिक और बौद्धिक प्रक्रियाओं को निर्धारित करती है। मनुष्य की चेतना उसके सामाजिक अस्तित्व का निर्धारण नहीं करती बल्कि उसका सामाजिक अस्तित्व उसकी चेतना का निर्धारण करता है।"¹⁸ राहुल के व्यवहार में आये बदलाव का कारण उसकी खंडित चेतना है और चेतना का निर्धारण उसके अभिशप्त अपमानित सामाजिक अस्तित्व से होता है। उसकी अतीत की स्मृतियों में कई खंडित सत्य हैं और वर्तमान में वह विश्वविद्यालय परिसर में हर जगह खुद को अलग और अकेला पाता है। ये सारी बातें उसकी इस तरह की चेतना का निर्माण करती हैं। किन्तु उसके भीतर परिवर्तन लाता है, अंजली जोशी का प्यार। अंजली जोशी की जाति पूज्य है। इसलिए उसकी स्मृतियों में कोई खंडित सत्य नहीं है। किन्तु वह खुद को कभी ब्राह्मण की तरह लाती ही नहीं। वह सिर्फ और सिर्फ मनुष्य है....मनुष्य स्त्री। किन्तु स्त्री के रूप में उसकी स्मृतियों में पुरुष सत्ता, पितृ सत्तात्मक समाज व्यवस्था के शोषण और गुलामी से उपजी कई खंडित अन्तर्गाथाएँ हैं। इसलिए अंजली जोशी प्यार करती है। उसका प्यार पुरुष सत्तात्मक समाजव्यवस्था की जड़ किन्तु कठोर सत्ता के प्रति विद्रोह है। राहुल अंजली को प्यार करते समय उसके शरीर पर कई तरह के घाव छोड़ता है किन्तु अंजली राहुल को प्यार करते समय पुरुषवादी सत्ता की आत्मा पर चोट करती है। जिसके कैद में अभी तक स्त्री रहती आयी है। राहुल और अंजली अपने यह जरूरी कार्य 'प्रेम' के बहाने/सहारे सिद्ध करते हैं।

राहुल और अंजली विश्वविद्यालय परिसर में प्रेम करते हैं। यहां विश्वविद्यालय का चुनाव सायास है। प्रोफेसर सत्ता के प्रतिनिधि हैं। सत्ता....प्रेम की अवधारणा को नष्ट कर रही है। यहां विश्वविद्यालय, सत्ता का टूल्स है। किसी हिन्दी कहानी में विश्वविद्यालय की इतनी स्पष्ट आलोचना नहीं हुई है। उदय प्रकाश दिखाते हैं कि ज्ञान उत्पादन किस तरह कितना निश्चेष्ट हो गया है। राहुल और अंजली विश्वविद्यालय परिसर में सेक्स करते हैं। उनके सहवास के बाद बेडशीट पर रक्त और वीर्य के धब्बे हैं। वह पुरुषवादी सत्ता के नैतिकता और पवित्रता का बेडशीट है। मनुष्यों के रक्त (शरीर) और वीर्य (भावना) के धब्बे से अपवित्र हो जाता है। राहुल और अंजली का प्रेम मानवीय है और मनुष्यता किसी भी 'पवित्र' चीज को नष्ट करने का मादूदा रखती है। उदय प्रकाश ने पीले रंग का प्रयोग भी सायाश किया है। भारतीय परम्परा और संस्कृति में पीला रंग कई शुभ और मंगलदायी संकेत के साथ आता है। कृष्ण को पीताम्बरधारी कहा जाता है। साथ ही ईसाई धर्म में मान्यता है कि क्राइस्ट की मृत्यु के समय पीले फूलों की वारिस

हुई थी। इस तरह सत्ता के द्वारा फैलाये गये शोषण और अराजकता के अंधेरे (काले रंग) के बरक्स उदय प्रकाश ईश्वरीय पीले रंग के मानवीय निहितार्थ खड़ा करते हैं। पीला रंग यौनिकता के आवेग का भी प्रतीक है, जिसके माध्यम से अंजली जोशी पवित्रता की पारंपरिक अवधारणा का विरोध करती है।

पवित्रता, नैतिकता आदि पद पुरुष वर्चस्व और उसकी सत्ता के द्वारा गढ़े गये हैं जिसके द्वारा स्त्री अस्मिता को नियन्त्रित, अतिक्रमित कर अपने हितों के अनुकूल नये सिरे से निर्मित किया जाता है। पीली छतरी वाली लड़की (अंजली जोशी) अपने मानवीय प्रेम के द्वारा पारम्परिक पवित्रता और नैतिकता का निषेध करती है। राहुल भी अंजली के इस निर्दोष प्रेम के आवेग का सहयात्री बनता है। पर वे जानते हैं कि उनकी लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई है। उनका प्रेम क्रांति है, प्रतिरोध है फिर भी वे सचेत हैं ट्रेन की बोगी नम्बर एस 8 के 41-42 वर्थ पर पड़े रह कर भी “अंजली और राहुल की आँखों पर नींद नहीं है। वे जागे हुए हैं और एक-दूसरे को देख रहे हैं। लगता है कि वे इसलिए जाग रहे हैं क्योंकि उन्हें एक-दूसरे को देखते रहना है।” उस अंधेरे समय में दो जागे हुए लोगों का जागता हुआ प्रेम सत्ता के वर्चस्व की प्रत्येक धारणा को छिन्न भिन्न कर देता है।

संदर्भ :

1. उदय प्रकाश, पीली छतरी वाली लड़की, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 40
2. हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली-9, राजकमल प्रकाशन, पृ. 23
3. उदय प्रकाश, पीली छतरी वाली लड़की, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 14
4. उदय प्रकाश, पीली छतरी वाली लड़की, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 7
5. उदय प्रकाश, पीली छतरी वाली लड़की, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 9
6. एडवर्ड सईद, ओरियन्टलिज्म, पृ. 40.
7. एडवर्ड सईद, ओरियन्टलिज्म, पृ. 207.
8. नामवर सिंह, इतिहास आलोचना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 26.
9. उदय प्रकाश, पीली छतरी वाली लड़की, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 132
10. उदय प्रकाश, पीली छतरी वाली लड़की, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 133
11. उदय प्रकाश, पीली छतरी वाली लड़की, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 108
12. उदय प्रकाश, पीली छतरी वाली लड़की, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 82
13. उदय प्रकाश, पीली छतरी वाली लड़की, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 144
14. उदय प्रकाश, पीली छतरी वाली लड़की, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 144
15. उदय प्रकाश, पीली छतरी वाली लड़की, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 145
16. उदय प्रकाश, पीली छतरी वाली लड़की, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 14
17. टेरी ईगलटन, मार्क्सवाद और साहित्यालोचन (अनुवाद वैभवसिंह) आधार प्रकाशन, हरियाणा, पृ. 25
18. टेरी ईगलटन, मार्क्सवाद और साहित्यालोचन (अनुवाद वैभवसिंह) आधार प्रकाशन, हरियाणा, पृ. 25

—आशुतोष, हिन्दी विभाग,

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470003

मोबाइल : 9479398591